निदेशक की कलम से .....

सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी को एक सशक्त माध्यम के रूप में अपनाते हुए इसके प्रचार–प्रसार हेतु भारत सरकार द्वारा अनेक प्रयास किए जा रहे हैं तथा इस दिशा में सार्थक परिणाम सामने आ रहे हैं। वर्तमान में कई वैज्ञानिक एवं अभियंता अपने शोध, विकास, तथा तकनीकी कार्यों में राजभाषा हिंदी का यथासंभव प्रयोग कर रहे हैं। इसी का परिणाम है कि तकनीकी एवं वैज्ञानिक कार्यक्रमों में राजभाषा हिंदी का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है।

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की, जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार, के अधीन एक स्वायत्तशासी संस्था है जिसने विगत 40+ वर्षों में जलविज्ञान तथा जल संसाधन के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट उपलब्धियों के बल पर राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशेष पहचान बनाई है। संस्थान जलविज्ञान के क्षेत्र में नई तकनीकों का आविष्कार करने और विश्व के अन्य देशों में प्रचलित तकनीकों को भारत के जलविज्ञान क्षेत्र में कार्यान्वित करने के लिए प्रतिबद्ध है।

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की अपने रोजाना के कार्यों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के साथ–साथ हर चौथे वर्ष जल संसाधन से जुड़े किसी एक महत्वपूर्ण विषय को लेकर राष्ट्रीय जल संगोष्ठी आयोजित करता है। इस संगोष्ठी की समूची कार्यवाही अर्थात सूचना विवरणिका से लेकर शोध पत्रों का आमंत्रण एवं प्रस्तुतीकरण तथा तकनीकी सत्रों का आयोजन एवं प्रोसीडिंग का मुद्रण आदि संबंधी समस्त कार्य हिंदी में ही किया जाता है।

विगत कई वर्षों से चली आ रही राष्ट्रीय जल संगोष्ठी के अयोजन की अपनी इस परम्परा को जारी रखते हुए संस्थान दिनांक 16–17 दिसंबर, 2019 को ''जल संसाधन एवं पर्यावरण'' विषय पर राष्ट्रीय जल संगोष्ठी आयोजित कर रहा है। वर्तमान परिस्थितियों में नदी पुनर्जीवन (Rejuvenation) तथा स्वच्छ भारत कार्यक्रम आदि परियोजनाओं के चलते यह विषय अत्यंत प्रासंगिक है। आम जनता से जुड़े एक अत्यन्त महत्वपूर्ण मुद्दे पर आधारित इस तरह की संगोष्ठी का आयोजन हिंदी भाषा में करना निःसंदेह एक सराहनीय प्रयास है। देश के सतत विकास के लिए यह नितान्त आवश्यक है कि जल संसाधनों का समुचित प्रबंधन सुनिश्चित किया जाए। जल के विभिन्न पहलुओं पर कार्यरत वैज्ञानिक इस संगोष्ठी में अपने अनुभवों एवं तकनीकी कार्यों का आदान–प्रदान कर जलविज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में हो रहे शोध को एक नई दिशा एवं गति प्रदान करेंगे।

विगत वर्षों में जलविज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय शोध हुए हैं परन्तु आम जनता, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों एवं कृषक वर्ग, तक इन शोधों का प्रत्यक्ष लाभ नहीं पहुंचा है। मुझे विश्वास है कि राजभाषा हिंदी में आयोजित की जा रही इस संगोष्ठी द्वारा जल क्षेत्र में देश की प्रमुख समस्याओं पर होने वाले विचार–विमर्श व चर्चा–परिचर्चा से आम जनमानस को लाभ मिलेगा।

आशा है कि राजसं. रूड़की द्वारा हिंदी में आयोजित की जा रही यह संगोष्ठी राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के साथ–साथ हिंदी में तकनीकी लेखन को समुचित बढ़ावा देने में सफल रहेगी और जल संसाधन के क्षेत्र में कार्यरत सभी विद्वतजनों के लिए यह संगोष्ठी सार्थक एवं उपयोगी साबित होगी।

मैं इस संगोष्ठी के सफल आयोजन हेतु जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार, समस्त प्रायोजक संगठनों, सभी प्रतिभागियों, आयोजनकर्ताओं तथा उन सभी व्यक्तियों का सहृदय आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने इसके आयोजन में अपेक्षित सहयोग दिया है।

शरद जैन

(शरद कुमार जैन)
निदेशक